बोधकथा

भूमिका

बालको, आप खेलकी पत्रिकाएं एवं जादूका घोडा, उडनेवाली परी जैसी कहानियां पढते हैं तथा 'टीवी'पर 'कार्टून' देखते हैं । इससे मनोरंजन तो होता है; किन्तु आपपर अच्छे संस्कार नहीं होते ! संस्कार होना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे जीवन आदर्श बनता है । प्रस्तुत ग्रन्थमें दी हुई कथाओंसे आपका न केवल मनोरंजन होगा, अपितु सुसंस्कारित जीवन जीनेकी कला भी जानोगे । साथ ही आपको इन कथाओंसे – सदाचार, धर्मप्रेम, संस्कृतिप्रेम, राष्ट्रभक्ति आदि विषयोंमें उत्तम ज्ञान भी मिलेगा ।

बालको, आप कथाएं पढकर जो अच्छी बातें सीखते हैं, उनके अनुसार प्रतिदिन आचरण भी करें ! क्रान्तिकारियोंने देशको स्वतन्त्र कराने के लिए जो बलिदान दिया है, उसकी कथाएं पढकर आपका देशप्रेम बढकर आपको भी अपने देशके लिए कुछ करना चाहिए, उदा. राष्ट्रध्वज का निरादर रोकना चाहिए । बालक जोरावर सिंह एवं फतेह सिंहने मरना स्वीकार किया; किन्तु अपना धर्म त्यागकर दूसरोंका धर्म स्वीकार नहीं किया । यह कथा पढकर आपका भी धर्माभिमान बढना चाहिए । आपको प्रतिदिन धर्मका आचरण करना चाहिए तथा देवताओंके निरादरका विरोध करना चाहिए ।

बालमित्रो, यह पूरा ग्रन्थ पढनेके पश्चात, आगे प्रत्येक रविवारको अथवा दीपावली एवं ग्रीष्मकालीन छुट्टियोंमें इस ग्रन्थमें छपी कथाओंको पुनः पढें तथा उनपर चिन्तन-मनन करें । सुसंस्कारित जीवन जीनेकी कला भलीभांति समझनेके लिए सनातनके 'संस्कारवर्ग'में जाएं तथा सनातनकी 'बालसंस्कार' ग्रन्थमाला अवश्य पढें ।

'ग्रन्थमें प्रकाशित कथाओंसे बोध लेकर सभी विद्यार्थी राष्ट्रप्रेमी एवं धर्मप्रेमी बनें', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! – संकलनकर्ता

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

卐 **भूमिका** १०

१. **सदाचारका (नैतिक एवं धार्मिक आचरणका) महत्त्व** ११

२. **आचरण कैसा हो ?** १२

३. **सकारात्मक दृष्टिकोण कैसा हो ?** १३

४. **अहंकार न हो !** १४

* महाबली हनुमानद्वारा भीमका गर्वहरण ! १५
* देवताके द्वारपर याचक होकर ही जाना पडता है ! १६

५. **सच्चा पश्चाताप** १७

६. **संगठनका महत्त्व** १७

७. **मनुष्यके कर्तव्य** १८

७ अ. आर्थिक ७ आ. राजनीतिक १८

८. **भगवानकी सर्वव्यापकता !** २०

९. **साधना** २१

१०. **हमारे आदर्श** २८

१० अ. देवता १० आ. गुरु २८

* गुरुका महत्त्व * गुरुका कार्य * गुरुभक्ति ३१

१० इ. शिष्य ३७

११. **महान हिन्दू संस्कृतिकी रक्षा करें !** ४१

११ अ. शरणागत कपोतकी (कबूतरकी) प्राणरक्षा हेतु प्राणार्पणके लिए तत्पर राजा शिबी ! ४१

११ आ. भारतीय वेशभूषाके प्रति अभिमान रखिए ! ४२

१२. राष्ट्रके प्रति कर्तव्यपालन करनेवालोंको कभी न भूलें ! ४२

१२ अ. बालक्रान्तिकारी (सुशील सेन, काशीनाथ पागधरे, दत्तू रंगारी) ४२

१२ आ. क्रान्तिकारी ४४

१२ इ. राष्ट्रपुरुष ४५

१२ इ १. प्रखर देशप्रेमी व स्वाभिमानी महाराणा प्रताप ! ४५

१२ इ २. क्रान्तिकारियोंका अधिवक्तापत्र निःशुल्क लेनेवाले देशबन्धु चित्तरंजन दास ! ४६

१२ इ ३. देशाभिमानसे समझौता न करनेवाले तिलक ! ४६

१२ इ ४. मातृभूमिकी रक्षा हेतु सावरकरकी सागरमें विश्वप्रसिद्ध छलांग ! ४७

१२ इ ५. देशके लिए शपथ लेकर प्राणोंका बलिदान करनेवाले नेताजी सुभाषचंद्र बोस ! ४८

१३. बच्चो, धर्माभिमानी बनकर धर्मरक्षा करें ! ४९

१३ अ. धर्मके लिए भीतमें चुने जाकर मृत्युको गले लगानेवाले जोरावरसिंह और फतेहसिंह ! ४९

१३ आ. देवताओंकी मूर्तियोंके निरादरसे क्रुद्ध होनेवाले स्वामी विवेकानंदजी ! ४९

१३ इ. बच्चो, ऐसा प्रखर धर्माभिमान अंगीकृत करें ! ५०

१४. बच्चो, प्रतिदिन साधना करें ! ५०

सनातनके ग्रन्थ नियमितरूपसे क्रय करनेवाले पाठकोंसे विनती !

सनातनके नूतन ग्रन्थोंके विषयमें जानकारी पानेके लिए सम्पर्क करें –
prasarsahitya@gmail.com अथवा **सचल–दूरभाष : ९३२२३१५३१७**

'सनातन'के ग्रंथ 'ऑनलाइन' क्रय करने हेतु उपलब्ध – www.SanatanShop.com